आचार्य सुमतिदेव

जीवन-परिचय : आचार्य सुमति का उल्लेख सन्मति-टीकाकार के रूप में मिलता है। आचार्य वादिराज ने अपने पार्श्वनाथचरित में सुमतिदेव को नमस्कार किया है। आचार्य सुमतिदेव अपने समय के प्रसिद्ध दिगम्बराचार्य थे।

सुमतिदेव अच्छे प्रभावशाली तार्किक आचार्य के रूप में प्रसिद्ध रहे हैं। तत्त्वसंग्रह और शिलालेख के उल्लेख के अनुसार आचार्य सुमतिदेव प्रमाण और नय के विशिष्ट विद्वान हैं।

आचार्य सुमतिदेव का स्थितिकाल 8वीं शताब्दी के लगभग रहा है।

रचना-परिचय: सुमतिदेव द्वारा लिखित टीका 'सन्मति-टीका' है। दूसरे ग्रन्थ 'सुमति-सप्तक' नाम का भी उल्लेख 'श्रवणबेलगोला' की प्रशस्ति में मिलता है। इन दोनों ग्रन्थों का विस्तार उपलब्ध नहीं है।